UP Board 10 Hindi 2024 Code : 801 (HC) Question Paper with Solutions

Time Allowed :3 Hours 15 Minutes	Maximum Marks :70	Total Questions :30

परीक्षार्थियों के लिये निर्देश :

1. प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।
3. इस प्रश्न-पत्र के दो खण्ड - खण्ड अ तथा खण्ड ब हैं ।
4. खण्ड अ में 1 अङ्क के 20 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं जिनके Solution ओ.एम.आर. Solution-पत्रक पर देने हैं ।
5. खण्ड अ के प्रत्येक प्रश्न का निर्देश पढ़कर केवल प्रदत्त ओ.एम.आर. Solution-पत्रक पर ही Solution दीजिए ।
6. ओ.एम.आर. Solution-पत्रक पर Solution देने के पश्चात् उसे काटें नहीं तथा इरेजर एवं ह्वाइटनर का प्रयोग न करें ।प्रश्न के अङ्क उसके सम्मुख अंकित हैं ।
7. खण्ड ब में 50 अङ्क के वर्णनात्मक प्रश्न हैं ।
8. खण्ड ब के सभी प्रश्नों के Solution एक साथ ही कीजिए ।

खण्ड - अ
(बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. "चन्द्रगुप्त" रचना की विधा है :

(A) निबन्ध
(B) उपन्यास
(C) नाटक
(D) कविता

Correct Answer : (C) नाटक

Solution : "चन्द्रगुप्त" रचना एक नाटक है । यह नाटक चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवन पर आधारित है, जो भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण पात्र था । यह नाटक उनके संघर्षों और उनके साम्राज्य के निर्माण की कहानी को प्रस्तुत करता है ।
नाटक साहित्य की एक प्रमुख विधा है जिसमें संवाद और अभिनय के माध्यम से कहानी को प्रस्तुत किया जाता है ।

2. 'दीप जले शंख बजे' के लेखक हैं :

(A) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
(B) शान्तिप्रिय द्विवेदी
(C) रामवृक्ष 'बेनीपुरी'
(D) देवेन्द्र सत्यार्थी

Correct Answer : (A) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

Solution : 'दीप जले शंख बजे' के लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' हैं । यह रचना भारतीय समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती है ।
देवेन्द्र सत्यार्थी एक प्रसिद्ध साहित्यकार थे जिनकी रचनाएँ समाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर केंद्रित होती थीं ।

3. शुक्लोत्तर युगीन लेखक हैं :

(A) विनय मोहन शर्मा
(B) मन्नू भण्डारी
(C) उपेन्द्रनाथ 'अश्क'
(D) सत्येन्द्र द्विवेदी

Correct Answer : (C) उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

Solution : शुक्लोत्तर युगीन लेखक उपेन्द्रनाथ 'अश्क' हैं । उपेन्द्रनाथ 'अश्क' हिन्दी साहित्य के प्रमुख लेखक रहे हैं और उन्होंने शुक्लोत्तर युग में महत्वपूर्ण योगदान दिया ।
शुक्लोत्तर युग हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण समय था, जब साहित्यिक दृष्टिकोण से कई नए प्रयोग हुए थे ।

4. हजारीप्रसाद द्विवेदी लेखक हैं :

(A) पानी के प्राचीर के
(B) आपका बंटी के
(C) बूँद और समुद्र के
(D) बाणभट्ट की आत्मकथा के

Correct Answer : (D) बाणभट्ट की आत्मकथा के

Solution : हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'बाणभट्ट की आत्मकथा' की रचना की है । यह उनकी प्रमुख काव्यात्मक और साहित्यिक कृतियों में से एक है ।
हजारीप्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के एक महत्वपूर्ण आलोचक और लेखक थे, जिन्होंने साहित्यिक आलोचना में गहरा योगदान दिया ।

5. निम्नलिखित में से जयशङ्कर प्रसाद का नाटक नहीं है :

(A) अजातशत्रु
(B) स्कन्दगुप्त
(C) ध्रुवस्वामिनी

(D) अन्धेर नगरी

Correct Answer : (D) अन्धेर नगरी

Solution : जयशङ्कर प्रसाद का 'अन्धेर नगरी' नाटक नहीं है । 'अन्धेर नगरी' नाटक भारत के प्रसिद्ध लेखक 'काका कालेलकर' द्वारा रचित है ।
जयशङ्कर प्रसाद हिन्दी नाटक के महान लेखक थे, जिनकी रचनाएँ भारतीय समाज और संस्कृति को समझाने में सहायक हैं ।

6. रीतिबद्ध काव्यधारा के कवि हैं :

(A) बिहारी लाल
(B) बोधा
(C) भिखारीदास
(D) धनानन्द

Correct Answer : (C) भिखारीदास

Solution : रीतिबद्ध काव्यधारा के प्रमुख कवि भिखारीदास थे । वे हिन्दी कविता के प्रमुख कवि रहे हैं, जिनकी कविताओं में रीतिबद्ध शैली का प्रभाव था ।
रीतिकाव्य शैली में गीत, सवैय्या, और अन्य काव्य रचनाओं का समावेश होता है, जो मुख्य रूप से दरबारी और शास्त्रीय काव्यशैली पर आधारित हैं ।

7. 'पद्माभरण' के रचयिता हैं :

(A) सेनापति
(B) केशव
(C) पद्माकर
(D) भूषण

Correct Answer : (C) पद्माकर

Solution : 'पद्माभरण' के रचनाकार पद्माकर हैं । यह एक प्रसिद्ध काव्य रचना है जो संस्कृत साहित्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है ।
पद्माकर एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि थे, जिन्होंने भक्ति और काव्यशास्त्र पर महत्वपूर्ण काव्य रचनाएँ कीं ।

8. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की रचना है :

(A) कनुप्रिया
(B) सुनहरे शैवाल
(C) ठण्डा लोहा
(D) राम की शक्ति पूजा

Correct Answer : (D) राम की शक्ति पूजा

Solution : सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की रचना 'राम की शक्ति पूजा' है । यह काव्य रचना भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है ।
'राम की शक्ति पूजा' महाकाव्य की तरह महाकाव्यात्मक दृष्टिकोण से लिखी गई थी, जिसमें राम के प्रति आदर्श श्रद्धा और शक्ति की पूजा का वर्णन है ।

9. प्रयोगवादी कवि हैं :

(A) भारत भूषण अग्रवाल
(B) केदारनाथ अग्रवाल
(C) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(D) सुमित्रानन्दन पन्त

Correct Answer : (A) भारत भूषण अग्रवाल

Solution : भारत भूषण अग्रवाल प्रयोगवादी कवि थे, जिनकी कविताओं में प्रयोगात्मकता और आधुनिक विचारधाराओं का समावेश था ।
प्रयोगवाद साहित्य की एक प्रवृत्ति है जो नई अभिव्यक्तियों, शैली और विचारों के प्रयोग को प्रोत्साहित करती है ।

10. 'आँगन के पार द्वार' के रचयिता हैं :

(A) धर्मवीर भारती
(B) भवानी प्रसाद मिश्र
(C) 'अज्ञेय'
(D) गिरिजा कुमार माथुर

Correct Answer : (C) 'अज्ञेय'

Solution : 'आँगन के पार द्वार' के रचनाकार 'अज्ञेय' हैं । यह एक प्रसिद्ध काव्य रचना है जिसमें जीवन के अनेक पहलुओं को सुंदरता से प्रस्तुत किया गया है ।
धर्मवीर भारती हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि, निबंधकार और नाटककार थे, जिन्होंने समाज के विभिन्न पहलुओं को अपनी रचनाओं में सजीव किया ।

11. 'करुण' रस का स्थायी भाव है :

(A) क्रोध
(B) शोक
(C) हास्य
(D) भय

Correct Answer : (B) शोक

Solution : 'करुण' रस का स्थायी भाव शोक है । करुण रस का अर्थ होता है दुःख, विषाद और शोक की भावना, जो साहित्यिक रचनाओं में व्यक्त होती है ।
'करुण रस' शोक और दुख की अभिव्यक्ति का रस है, जिसे काव्य में भावनाओं की गहरी अभिव्यक्ति के

रूप में प्रस्तुत किया जाता है ।

12. 'चरण-कमल बंदौ हरि राई ।' में प्रयुक्त अलङ्कार है :

(A) उपमा
(B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपक
(D) यमक

Correct Answer : (C) रूपक

Solution : 'चरण-कमल बंदौ हरि राई ।' में प्रयुक्त अलङ्कार रूपक है । रूपक एक प्रकार का अलंकार है जिसमें किसी वस्तु या व्यक्ति के गुणों को किसी अन्य वस्तु से बिना 'जैसा' या 'के समान' शब्द के द्वारा व्यक्त किया जाता है ।
रूपक अलंकार में एक वस्तु या व्यक्ति के गुणों को दूसरे वस्तु के गुणों से व्यक्त किया जाता है, जैसे किसी व्यक्ति को देवता की तरह गुणवान बताया जाता है ।

13. 'रोला' छन्द के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं ?

(A) 24
(B) 16
(C) 13
(D) 11

Correct Answer : (A) 24

Solution : 'रोला' छन्द के प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं । यह एक विशेष प्रकार का छन्द है जो विशेष रूप से हिन्दी साहित्य में प्रयोग किया जाता है ।
छन्द की मात्राएँ कविता की लय और गति को निर्धारित करती हैं, जो काव्य रचनाओं को और प्रभावशाली बनाती हैं ।

14. 'अभ्यागत' शब्द में उपसर्ग है :

(A) अनु
(B) अपि
(C) अव
(D) अभि

Correct Answer : (D) अभि

Solution : 'अभ्यागत' शब्द में उपसर्ग 'अभि' है । 'अभि' का अर्थ होता है 'की ओर', 'पास' या 'प्रति' । उपसर्ग शब्दों के अर्थ में परिवर्तन लाने का कार्य करते हैं, जैसे 'अभि' का अर्थ 'पास' या 'की ओर' होता है ।

15. 'नीलकमल' में समास है :

(A) द्रन्द्र
(B) द्विगु
(C) कर्मधारय
(D) बहुब्रीहि

Correct Answer : (C) कर्मधारय

Solution : 'नीलकमल' में समास 'कर्मधारय' है । इसमें 'नील' और 'कमल' का संबंध है, जहाँ 'कमल' एक वस्तु को दर्शाता है और 'नील' उसका गुण ।
कर्मधारय समास में दो शब्दों का संयोजन होता है, जिसमें एक शब्द दूसरे शब्द का गुण बताता है, जैसे 'नीलकमल' (नील का कमल) ।

16. 'योगी' शब्द का तद्भव शब्द होगा :

(A) जोगी
(B) युगी
(C) जौगी
(D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer : (A) जोगी

Solution : 'योगी' शब्द का तद्भव शब्द 'जोगी' है । तद्भव शब्द वे शब्द होते हैं जो संस्कृत से भारतीय भाषाओं में आए और उनके रूप में बदलाव आया ।
तद्भव शब्द संस्कृत से उत्पन्न होते हैं, लेकिन उनकी ध्वनि और रूप में स्थानीय भाषा के अनुसार परिवर्तन होता है ।

17. 'युष्मद्' शब्द की सप्तमी विभक्ति, एकवचन का रूप होगा :

(A) तब
(B) त्वत्
(C) त्वयि
(D) तुभ्यम्

Correct Answer : (C) त्वयि

Solution : 'युष्मद्' शब्द की सप्तमी विभक्ति, एकवचन का रूप 'त्वयि' होगा । यह संस्कृत में सम्बोधन या उपभक्ति के लिए प्रयोग होता है ।
सप्तमी विभक्ति में स्थान, स्थिति या किसी उद्देश्य को व्यक्त किया जाता है, जैसे 'त्वयि' (तुमसे) शब्द का प्रयोग ।

18. रचना के आधार पर वाक्य के कितने भेद होते हैं ?

(A) आठ
(B) तीन
(C) चार

(D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer : (B) तीन

Solution : रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं : सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्रित वाक्य । इन वाक्यों में संरचना और विचार की प्रक्रिया में अंतर होता है ।
वाक्य रचनाएँ विचार व्यक्त करने का प्रमुख तरीका होती हैं, जो भाषा में स्पष्टता लाती हैं ।

19. 'भाववाच्य' में प्रधानता होती है :

(A) कर्ता की
(B) कर्म की
(C) क्रिया की
(D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer : (D) इनमें से कोई नहीं

Solution : 'भाववाच्य' में प्रधानता इनमें से कोई नहीं होती है ।
भाववाच्य में कर्म और क्रिया का विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है, जिससे वाक्य की संरचना और अर्थ में स्पष्टता आती है ।

20. 'अविकारी' शब्द है :

(A) इन्द्र
(B) गाय
(C) यथासम्भव
(D) आप

Correct Answer : (C) यथासम्भव

Solution : 'अविकारी' शब्द 'यथासम्भव' है, क्योंकि यह एक विशेषण के रूप में कार्य करता है और इसका रूप कभी नहीं बदलता ।
अविकारी शब्द वह होता है जो अपने रूप में परिवर्तन नहीं करता और इसका उपयोग समान रूप से होता है ।

खण्ड म
(वर्णनात्मक प्रश्न)

21. निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश पर आधारित सभी प्रश्नों के Solution दीजिए :

(क) कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है । यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है । किसी युवा-पुरुष की संगति यदि बुरी होगी, तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरंतर उन्नति की ओर ले जाएगी ।
(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए ।

Solution : उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ यह है कि कुसंगति और सद्वृत्ति के प्रभाव के बारे में बताया गया है । गद्यांश में यह विचार किया गया है कि किस प्रकार हमारी संगत का असर हमारी नीति, सद्वृत्ति, और बुद्धि पर पड़ता है । इस संदर्भ में युवा व्यक्ति की संगति के बारे में बताया गया है कि यदि वह बुरी संगत करता है, तो यह उसे अवनति की ओर ले जाती है, जबकि अच्छी संगत उसे उन्नति की ओर बढ़ाती है ।

(ii) गद्यांश के रेखाङ्कित अंश की व्याख्या कीजिए ।

Solution : गद्यांश में रेखांकित अंश में यह कहा गया है कि कुसंगति के दुष्परिणाम सिर्फ नीति और सद्वृत्ति तक सीमित नहीं रहते, बल्कि यह व्यक्ति की बुद्धि पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं । बुरी संगति व्यक्ति के जीवन में अवनति का कारण बनती है, जैसे कि चक्की में बँधकर व्यक्ति हर दिन गड्ढे में गिरता जाता है । वहीं, अच्छी संगति व्यक्ति को सहारा देने वाली बाहु के समान होती है, जो उसे निरंतर उन्नति की दिशा में ले जाती है । यह जीवन में सकारात्मक बदलाव लाती है ।

(iii) 'सुदृढ़ बाहु' का क्या अर्थ है ?

Solution : 'सुदृढ़ बाहु' का अर्थ है वह शक्तिशाली सहारा या समर्थन जो व्यक्ति को जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है । यह बाहु किसी मजबूत हाथ के समान होती है, जो व्यक्ति को गिरने से बचाती है और उसे निरंतर उन्नति की दिशा में बढ़ने के लिए सहारा देती है । यह अच्छे मार्गदर्शन, सहायता और सकारात्मक संगति का प्रतीक है ।
संगति का व्यक्ति के जीवन पर गहरा प्रभाव होता है, और हमें हमेशा अच्छे लोगों के साथ रहकर सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ना चाहिए ।

अथवा

(ख) हिन्दी में प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है । उसके निर्माता यह समझ रहे हैं कि उनके साहित्य में भविष्य का गौरव निहित है । पर कुछ ही समय के बाद उनका यह साहित्य भी अतीत का स्मारक बन जाएगा और आज जो तरुण है, वही वृद्ध होकर अतीत के गौरव का स्वप्न देखेंगे । उनके स्थान में तरुणों का फिर दूसरा दल आ जाएगा जो भविष्य का स्वप्न देखेगा । दोनों के ही स्वप्न सुखद होते हैं, क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं ।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए ।

Solution : यह गद्यांश प्रगतिशील साहित्य के निर्माता और उनके दृष्टिकोण पर आधारित है । लेखक यह समझ रहे हैं कि वर्तमान में जो साहित्य प्रगतिशील बन रहा है, वह भविष्य में एक दिन अतीत का हिस्सा बन जाएगा । यह विचार साहित्य के विकास और समय के साथ बदलने के बारे में है, जहां हर पीढ़ी अपने समय को महत्वपूर्ण समझती है, लेकिन एक समय बाद वही साहित्य अतीत के रूप में याद किया जाएगा ।

(ii) गद्यांश के रेखाङ्कित अंश की व्याख्या कीजिए ।

Solution : गद्यांश के रेखांकित अंश में यह कहा गया है कि प्रगतिशील साहित्य का भविष्य में गौरव है, लेकिन समय के साथ वह भी अतीत में बदल जाएगा । वर्तमान समय में जो युवा लोग हैं, वे भविष्य के दृष्टिकोण को लेकर उत्साहित होते हैं, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, वही युवा वृद्ध होकर अतीत के गौरव का सपना देखने लगते हैं । यही प्रकृति है हर पीढ़ी के सोचने की और आगे बढ़ने की । लेखक

यह भी बताते हैं कि हर पीढ़ी के सपने सुखद होते हैं, क्योंकि वे अपने समय के हिसाब से अच्छे लगते हैं, और जैसा कि कहा गया है, "दूर के ढोल सुहावने होते हैं", यानी भविष्य हमेशा रोमांचक लगता है ।

(iii) प्रस्तुत गद्यांश में 'प्रगतिशीलता' से क्या तात्पर्य है ?

Solution : 'प्रगतिशीलता' से तात्पर्य है एक ऐसे साहित्यिक दृष्टिकोण से जो समाज में बदलाव, विकास और नए विचारों को स्वीकार करता है । यह साहित्य उस समय की समस्याओं और चुनौतियों को उठाता है और उनके समाधान के लिए विचारशील दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है । प्रगतिशील साहित्य वर्तमान को बेहतर बनाने के लिए भविष्य को देखते हुए लिखता है, और यह समाज में सुधार और उन्नति के लिए प्रेरणा प्रदान करता है । प्रगतिशीलता केवल साहित्य में ही नहीं, बल्कि समाज के हर क्षेत्र में बदलाव और सुधार के लिए एक दृष्टिकोण है, जो पुरानी परंपराओं से बाहर निकलकर नए विचारों और दृष्टिकोणों को अपनाता है ।

22. निम्नलिखित में से किसी एक पद्यांश पर आधारित सभी प्रश्नों के Solution दीजिए :

(क) गोरज बिराजै भाल लहलही बनमाल
आगे गैयाँ पाछे ग्वाल गावै मृदु बानि री ।
तैसी धुनि बाँसुरी की मधुर मधुर जैसी,
बंक चितवनि मंद-मंद मुसकानि री ।
कदम बिटप के निकट तटिनी के तट
अटा चढ़ि चाहि पीत पट फहरानि री ।
रस बरसावैं तन-तपनि बुझावैं नैन,
प्राननि रिझावै वह आवै रसखानि री ।।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए ।

Solution : यह पद्यांश हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सूरदास के भक्ति काव्य से लिया गया है । सूरदास जी ने कृष्ण के जीवन और उनके रूप का बहुत सुंदर चित्रण किया है । यहाँ इस पद्यांश में कृष्ण के रूप, उनके बांसुरी वादन की मधुरता, और उनकी मस्तमौला मुस्कान का वर्णन किया गया है ।

(ii) गोरज के बीच कृष्ण के सुन्दर रूप का सजीव चित्रण कवि ने किस प्रकार किया है ?

Solution : कवि ने गोरज के बीच कृष्ण के सुंदर रूप का चित्रण बहुत सजीव तरीके से किया है । कृष्ण के गहनों से सजे रूप, उनका हंसमुख चेहरा और बांसुरी की मधुर ध्वनि के साथ उनका शरीर आकर्षक और मोहक रूप में प्रस्तुत किया गया है । कृष्ण की मुस्कान, उनके चलने का अंदाज, उनके पीताम्बर (पीले वस्त्र) और बांसुरी की ध्वनि को कवि ने बहुत खूबसूरती से वर्णित किया है, जिससे कृष्ण के रूप का एक अद्भुत चित्र उभरता है ।

(iii) पद्यांश के रेखाङ्कित अंश की व्याख्या कीजिए ।

Solution : पद्यांश में रेखांकित अंश में कृष्ण के रूप का अत्यंत आकर्षक चित्रण किया गया है । कवि बताते हैं कि कृष्ण के रूप में एक आकर्षक छवि है जो सबको मंत्रमुग्ध कर देती है । उनकी बांसुरी की ध्वनि इतनी मधुर है कि वह जैसे किसी मृदु और प्यारे स्वर में बज रही हो । कृष्ण के मुस्कुराने से सब कुछ प्रिय और प्यारा लगता है । उनके कदमों की ध्वनि और उनके पीले वस्त्रों के साथ उनकी छवि

और भी सुंदर और मनमोहक हो जाती है । इस अंश में कवि कृष्ण के रूप और उनके व्यक्तित्व को बहुत ही आकर्षक और सुखद तरीके से प्रस्तुत कर रहे हैं । सूरदास जी के पद्यांशों में कृष्ण के रूप का वर्णन हमेशा भावनाओं और भक्ति के साथ होता है, जो पाठक या श्रोता को कृष्ण के प्रति श्रद्धा और प्रेम से भर देता है ।

अथवा

(ख) फूल झरता है
फूल शब्द नहीं ।
बच्चा गेंद उछालता है,
सदियों के पार
लोकती है उसे एक बच्ची ।
बूढ़ा गाता है एक पद्य,
दुहराता है दूसरा बूढ़ा,
भूगोल और इतिहास से परे
किसी दालान में बैठा हुआ ।

(i) उपर्युक्त कविता के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए ।

Solution : उपर्युक्त कविता के कवि 'अज्ञेय' हैं । कविता का शीर्षक 'फूल झरता है' है ।

(ii) रेखाङ्कित पद्यांश का अंश स्पष्ट कीजिए ।

Solution : रेखांकित अंश में कवि ने जीवन के सामान्य कृत्यों और घटनाओं की महत्ता को दर्शाया है । जैसे, एक बच्चा गेंद उछालता है, और वह खेल एक अन्य बच्ची द्वारा सदियों बाद देखा जाता है । यहाँ पर कवि यह दर्शाना चाहते हैं कि घटनाएँ समय के पार, पीढ़ी दर पीढ़ी, जीवन के विभिन्न हिस्सों से जुड़ी रहती हैं, और उनका महत्व न केवल वर्तमान में, बल्कि भविष्य में भी महसूस होता है । यह समय और जीवन की निरंतरता का प्रतीक है ।

(iii) कवि पद्यांश में किसकी विशेषता बता रहा है ?

Solution : कवि इस पद्यांश में जीवन की निरंतरता और समय के पार यात्रा करने की विशेषता बता रहे हैं । वे यह बताने का प्रयास कर रहे हैं कि जीवन के साधारण क्रियाएँ, जैसे खेल, गाना, आदि, कालातीत होती हैं और यह भविष्य की पीढ़ियों से जुड़ी होती हैं । साथ ही, यह मानवता की अनुवांशिक विशेषता है कि प्रत्येक पीढ़ी पिछले अनुभवों से जुड़ी रहती है और उस पर अपना दृष्टिकोण जोड़ती है । कवि के द्वारा दी गई यह गहरी दृष्टि जीवन की निरंतरता और समय के पार रिश्तों को जोड़ने की विशेषता को स्पष्ट करती है ।

23. नीचे दिए गए संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का संदर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए :
(क) वाराणस्यां प्राचीनकालादेव गेहे-गेहे विद्याया : दिव्यं ज्योति : द्योतते । अधुनाऽपि अत्र संस्कृत-वाग्धारा सततं प्रवहति, जनानां ज्ञानं च वर्द्धयति । अत्र अनेके आचार्या : मूर्धन्या : विद्वांस : वैदिकवा-ङ्मयस्य अध्ययने अध्यापने च इदानीं निरता : ।

Solution : संदर्भ : यह संस्कृत गद्यांश वाराणसी शहर के सांस्कृतिक और शैक्षिक महत्व को दर्शाता है । वाराणसी एक प्राचीन नगरी है, जहां पर विद्या और संस्कृत के अध्ययन की परंपरा सदियों से रही है ।

गद्यांश में यह बताया गया है कि यहां पर संस्कृत का अध्ययन और प्रचार-प्रसार निरंतर चल रहा है और इसका असर जनसाधारण के ज्ञान पर पड़ रहा है ।
हिन्दी में अनुवाद : वाराणसी में प्राचीन काल से ही घर-घर में विद्याओं की दिव्य ज्योति चमकती रही है । आज भी यहां संस्कृत वाणी का प्रवाह निरंतर होता रहता है, जो लोगों के ज्ञान को बढ़ाता है । यहां पर अनेक प्रतिष्ठित आचार्य और विद्वान, जो वैदिक साहित्य के अध्ययन और शिक्षण में निरंतर सक्रिय हैं, इस क्षेत्र में कार्यरत हैं । वाराणसी का सांस्कृतिक और शैक्षिक महत्व अत्यधिक है, जहाँ संस्कृत और वैदिक साहित्य का गहरा प्रभाव आज भी देखने को मिलता है ।

अथवा

(ख) एतस्मिन्नेव काले तस्य ग्रामीणस्य ग्राम : आगतः । स विहसन् रेलयानात् अवतीर्य स्वग्रामं प्रति अचलत् । नागरिक : लज्जितः भूत्वा तूष्णीम् अतिष्ठत् । सर्वे यात्रिण : वाचालं तं नागरिकं दृष्ट्वा अहसन् । तदा स नागरिक : अन्वभवत् यत् ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति ।

Solution : संदर्भ : यह संस्कृत गद्यांश एक गांव के नागरिक की स्थिति को दर्शाता है । यह गद्यांश उस समय की सामाजिक मानसिकता और ज्ञान की सीमाओं को उजागर करता है, जब एक सामान्य व्यक्ति, जो तकनीकी और आधुनिक विचारों से अनजान था, ने एक अत्यधिक शिक्षित और सक्षम व्यक्ति के रूप में अपनी स्थिति का मूल्यांकन किया ।
हिन्दी में अनुवाद : इस समय में उस ग्रामीण का गांव आ गया था । वह हंसते हुए ट्रेन से उतरकर अपने गांव की ओर बढ़ा । नागरिक शर्मिंदा होकर चुपचाप खड़ा रहा । सभी यात्री उस नागरिक को देख कर हंस रहे थे । तब उस नागरिक को यह अनुभव हुआ कि ज्ञान कहीं से भी प्राप्त किया जा सकता है । यह गद्यांश यह दिखाता है कि ज्ञान और शिक्षा कभी किसी स्थान या स्थिति तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह हर स्थान और व्यक्ति के लिए उपलब्ध है ।

24. नीचे दिए गए संस्कृत श्लोक में से किसी एक का संदर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

(क) नीर-क्षीर-विवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेत् ।
विश्वमिस्मन्नधुनान्य : कुलव्रतं पालयिष्यति कः ।

Solution : संदर्भ : यह संस्कृत श्लोक ज्ञान और विवेक की महत्ता पर आधारित है । इसमें हंस के रूपक का उपयोग करते हुए यह बताया गया है कि केवल वही व्यक्ति सही मार्ग पर चल सकता है जो नीर (पानी) और क्षीर (दूध) में भेद करने की क्षमता रखता है, यानी जो विवेकशील और समझदार हो ।

हिन्दी में अनुवाद : जो व्यक्ति हंस के समान नीर और क्षीर का भेद करने में सक्षम होता है, वही इस संसार में धर्म और आचार्य के मार्ग को बनाए रख सकता है । इस संसार में धर्म के पालन में कोई दूसरा व्यक्ति सक्षम नहीं है, जो इस विवेक को प्राप्त नहीं करता । यह श्लोक हमें यह सिखाता है कि विवेक और समझ जीवन में सही मार्ग पर चलने के लिए आवश्यक हैं ।

अथवा

(ख)दाक्षयमेकपदं धर्म्यं दानमेकपदं यशः ।
सत्यमेकपदं स्वर्ग्यं शीलमेकपदं सुखम् ।।

Solution : संदर्भ : यह संस्कृत श्लोक जीवन के उच्चतम आदर्शों को प्रस्तुत करता है । इसमें दाक्षयता (कुशलता), धर्म, दान, सत्य, शील और सुख की महत्ता को एक-एक पद में व्यक्त किया गया है । यह श्लोक हमें

यह सिखाता है कि ये गुण जीवन में सर्वोत्तम होते हैं और इन्हें एक ही स्थान पर सिद्ध किया जा सकता है ।

हिन्दी में अनुवाद : कुशलता एक प्रकार की धार्मिकता है, दान एक प्रकार की प्रतिष्ठा है, सत्य एक प्रकार का आत्मज्ञान है, और शील एक प्रकार का सुख है । इन सभी गुणों का समन्वय जीवन में सर्वोत्तम होता है ।
यह श्लोक हमें जीवन में शील, सत्य और धर्म के महत्व को समझाता है, जो न केवल हमें आत्मिक सुख प्रदान करते हैं, बल्कि समाज में भी हमें सम्मान और प्रतिष्ठा दिलवाते हैं ।

25. अपने पठित खण्डकाव्य के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का Solution लिखिए :
(क)
(i) **'मातृ-भूमि के लिए' खण्डकाव्य के आधार पर 'चन्द्रशेखर आज़ाद' की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।**

Solution : 'मातृ-भूमि के लिए' खण्डकाव्य में चन्द्रशेखर आज़ाद को एक साहसी, निडर, और देशभक्त स्वतंत्रता सेनानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है । उनकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :
1. साहस और निडरता : चन्द्रशेखर आज़ाद ने अपने जीवन के हर क्षण में साहस का परिचय दिया । उनका विश्वास था कि मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए बलिदान देना सर्वोत्तम कार्य है । उन्हें अंग्रेज़ों का डर नहीं था, और उन्होंने कई बार अंग्रेज़ी शासन के खिलाफ क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया ।
2. निष्ठा और बलिदान : आज़ाद का जीवन मातृभूमि के प्रति निष्ठा से भरा हुआ था । उन्होंने अपने व्यक्तिगत सुखों को त्याग कर देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया । उनके लिए भारत की स्वतंत्रता सर्वोपरि थी ।
3. विवेक और रणनीति : चन्द्रशेखर आज़ाद एक कुशल रणनीतिकार थे । उन्होंने कई सफल क्रांतिकारी अभियानों की योजना बनाई और उन्हें अमल में लाया । उनके संघर्ष का उद्देश्य केवल स्वतंत्रता प्राप्ति ही नहीं, बल्कि देशवासियों में जागरूकता और एकता लाना था ।
4. अडिग विश्वास : उनके व्यक्तित्व में एक अडिग विश्वास था । वे जानते थे कि अगर उनका संघर्ष सफल नहीं भी होता, तो भी उनके बलिदान से आने वाली पीढ़ियाँ प्रेरित होंगी । उनका यह विश्वास उनकी महानता को प्रमाणित करता है ।

(ii) **'मातृ-भूमि के लिए' खण्डकाव्य के 'बलिदान' सर्ग का कथानक लिखिए ।**

Solution : 'मातृ-भूमि के लिए' खण्डकाव्य का 'बलिदान' सर्ग चन्द्रशेखर आज़ाद के अद्वितीय बलिदान को दर्शाता है । इस सर्ग में आज़ाद का अंतिम समय और उनका बलिदान वर्णित है । जब आज़ाद को अंग्रेज़ों ने घेर लिया, तब उन्होंने आत्मसमर्पण करने के बजाय स्वयं को गोली मार ली, ताकि वे किसी भी हाल में अंग्रेज़ों के हाथों न पड़ें । उनका यह बलिदान न केवल उनके अद्वितीय साहस का प्रतीक था, बल्कि यह पूरे देश के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया । उनका बलिदान यह दर्शाता है कि उन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया और इसके लिए उनका संघर्ष अनमोल था । यह सर्ग उनके त्याग और बलिदान की गाथा को जीवित रखता है, जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के शौर्य को उच्चतम स्थान पर स्थापित करता है ।
चन्द्रशेखर आज़ाद का बलिदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना ।

(ख) (i) 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के आधार पर श्रीकृष्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

Solution : 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य में श्रीकृष्ण का चरित्र अत्यंत प्रेरणादायक और विविधताओं से भरा हुआ है । इस काव्य में श्रीकृष्ण को एक धर्मात्मा, योगी, और विश्वकवि के रूप में प्रस्तुत किया गया है । उनके जीवन के अनेक पहलुओं को इस काव्य में गहराई से दर्शाया गया है ।
1. धर्म के रक्षक : श्रीकृष्ण का जीवन धर्म की रक्षा और अधर्म के नाश का प्रतीक है । वे हमेशा सत्य और न्याय का पालन करते हुए लोगों को धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं ।

2. माधुर्य और प्रेम : श्रीकृष्ण का प्रेम ही उनका सबसे प्रमुख रूप है । उन्होंने गोपियों और अर्जुन के साथ अपने प्रेम और रिश्तों की गहरी भावनाओं का परिचय दिया । 'रासलीला' और 'गीता' में उनका प्रेम एक गूढ़ और अद्वितीय रूप में उभरता है, जिसमें भगवान का भक्त के प्रति असीम प्रेम दिखाया गया है ।

3. ज्ञान और योग : श्रीकृष्ण योग के श्रेष्ठतम रूप को दर्शाते हैं, विशेषकर 'भगवद गीता' में उन्होंने अर्जुन को कर्मयोग, भक्ति योग, और ज्ञान योग का उपदेश दिया । वे जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझने और उसे पूरी तरह से जीने की प्रेरणा देते हैं ।

4. कूटनीति और नेतृत्व : श्रीकृष्ण की कूटनीतिक क्षमताएँ और उनका नेतृत्व असाधारण थे । कुरुक्षेत्र में उनकी रणनीतियाँ और अर्जुन को युद्ध के लिए प्रेरित करने की क्षमता उनके अद्वितीय नेतृत्व का प्रमाण हैं ।

(ii) **'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के 'पूर्वाभास' सर्ग का कथानक लिखिए ।**

Solution : 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य का 'पूर्वाभास' सर्ग भगवान श्रीकृष्ण के जीवन के पहले चरण और उनके भविष्य के कार्यों का पूर्व संकेत प्रस्तुत करता है । इस सर्ग में, भगवान कृष्ण के जन्म के समय से जुड़ी घटनाओं और उनकी प्रारंभिक क्रीतियों का चित्रण किया गया है ।

1. कृष्ण का जन्म : सर्ग की शुरुआत श्रीकृष्ण के अवतरण से होती है, जिसमें देवकी और वसुदेव के यहां कृष्ण का जन्म होता है । यह जन्म संसार को अंधकार से उबारने के लिए हुआ था ।

2. कृष्ण की क्रीतियाँ : इस सर्ग में कृष्ण के बचपन की लीलाओं का वर्णन भी किया गया है, जैसे कि उनके द्वारा राक्षसों का वध, गोवर्धन पर्वत उठाना, और कंस से संघर्ष ।

3. कृष्ण के दर्शन : श्रीकृष्ण के जीवन की घटनाओं का पूर्वाभास उनके आत्मविश्वास, प्रेम, और दयालुता से होता है । उनका उद्देश्य केवल समाज के उद्धार के लिए कार्य करना और धर्म की पुनर्स्थापना करना था ।

इस सर्ग का मुख्य उद्देश्य यह है कि यह भविष्यवाणी करता है कि भगवान श्रीकृष्ण का जीवन धर्म की रक्षा और अधर्म के नाश के लिए अभिमुख रहेगा ।
'अग्रपूजा' खण्डकाव्य भगवान श्रीकृष्ण के जीवन के प्रमुख घटनाओं और उनके जीवन के उद्देश्य को प्रदर्शित करने वाली एक महत्वपूर्ण काव्य रचना है ।

(ग) (i) 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के आधार पर सुभाष चन्द्र बोस की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

Solution : 'जय सुभाष' खण्डकाव्य में सुभाष चन्द्र बोस के जीवन और कार्यों का अद्भुत चित्रण किया

गया है । इस काव्य के माध्यम से उनकी चारित्रिक विशेषताओं को उकेरा गया है, जो उन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नेता के रूप में प्रस्तुत करती हैं । उनके जीवन के कुछ प्रमुख पहलुओं की व्याख्या निम्नलिखित है :

1. दृढ़ संकल्प और साहस : सुभाष चन्द्र बोस का जीवन दृढ़ संकल्प और साहस का प्रतीक था । उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ बलिदान किया । वे जानते थे कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कठिन संघर्ष और साहस की आवश्यकता है, और उन्होंने इसका लगातार प्रदर्शन किया ।

2. देशभक्ति और निष्ठा : सुभाष चन्द्र बोस का देशभक्ति का जज्बा अडिग था । उनका जीवन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रति उनकी निष्ठा और प्रेम का परिचायक था । वे हमेशा यह मानते थे कि देश की स्वतंत्रता के लिए किसी भी प्रकार का बलिदान करना चाहिए ।

3. नेतृत्व क्षमता और दृष्टिकोण : बोस एक कुशल नेता थे । उनकी नेतृत्व क्षमता और रणनीति ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नया मोड़ दिया । उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय सेना का गठन किया और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ एक सशस्त्र संघर्ष शुरू किया ।

4. अत्यधिक आत्मविश्वास : सुभाष चन्द्र बोस में अपार आत्मविश्वास था । उन्होंने कभी भी परिस्थितियों से हार नहीं मानी । उनका विश्वास था कि भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए किसी भी कीमत पर संघर्ष करना होगा ।

(ii) **'जय सुभाष' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथावस्तु लिखिए ।**

Solution : 'जय सुभाष' खण्डकाव्य का तृतीय सर्ग सुभाष चन्द्र बोस के संघर्ष के दिनों का वर्णन करता है । इस सर्ग में उनका जीवन उन दिनों के संघर्ष को दर्शाता है जब वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से अलग होकर एक स्वतंत्र आंदोलन की दिशा में बढ़े । इस सर्ग का कथानक निम्नलिखित है :

1. नेतृत्व का संघर्ष : तृतीय सर्ग में बोस की राष्ट्रीय राजनीति में बढ़ती सक्रियता को दर्शाया गया है । उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में रहते हुए भी ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपने विचारों को सार्वजनिक किया और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए दृढ़ संकल्पित रहते हुए कई कूटनीतिक प्रयास किए ।

2. स्वतंत्रता संग्राम की दिशा : इस सर्ग में बोस की रणनीति और उनकी मंशा को प्रस्तुत किया गया है कि कैसे वे अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष में विश्वास करते थे और इसके लिए उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय सेना के गठन की योजना बनाई । उनका उद्देश्य भारतीयों को जागरूक करना और एकजुट करना था ।

3. संघर्ष और चुनौतियाँ : इस सर्ग में बोस की विदेश यात्रा का उल्लेख किया गया है, जिसमें उन्होंने जापान और जर्मनी जैसे देशों से मदद की अपील की थी । उन्हें यह समझ में आ गया था कि बिना बाहरी सहयोग के स्वतंत्रता प्राप्ति संभव नहीं होगी । वे विदेशों से समर्थन जुटाने के लिए संघर्ष करते रहे ।

4. महत्वपूर्ण निर्णय : तृतीय सर्ग में यह भी दिखाया गया है कि सुभाष चन्द्र बोस ने अपने संघर्ष के दौरान कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए, जैसे कि भारतीय राष्ट्रीय सेना के गठन और 'दिल्ली चलो' अभियान की योजना । उनका यह निर्णय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक नया अध्याय लेकर आया ।

'जय सुभाष' खण्डकाव्य में सुभाष चन्द्र बोस के जीवन और संघर्षों का अत्यधिक प्रेरणादायक चित्रण किया गया है, जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को उजागर करता है ।

(घ) (i) 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के 'पृथ्वीराज' सर्ग का कथानक लिखिए ।

Solution : 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य का 'पृथ्वीराज' सर्ग महाराणा प्रताप के पिता, पृथ्वीराज के जीवन और उनके संघर्षों का वर्णन करता है । इस सर्ग में पृथ्वीराज के जीवन के प्रारंभिक संघर्षों, उनके साहस और दृढ़ संकल्प की कहानी प्रस्तुत की जाती है । उनका उद्देश्य केवल मेवाड़ की रक्षा करना और भारतीय साम्राज्य के विस्तार के लिए हर संभव प्रयास करना था ।

1. पृथ्वीराज का शासन : इस सर्ग में पृथ्वीराज का शासन, उनके शौर्य और साहस का चित्रण किया गया है । उन्हें एक साहसी शासक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिन्होंने मुग़ल साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष किया और मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए उन्हें कई संघर्षों का सामना करना पड़ा ।

2. राज्य की रक्षा : इस सर्ग में पृथ्वीराज की कूटनीति और उनके नेतृत्व का उल्लेख है, जो उन्होंने मेवाड़ की सुरक्षा के लिए इस्तेमाल किया । उन्होंने विभिन्न दुश्मनों का सामना किया और मेवाड़ के साम्राज्य की रक्षा के लिए अपनी जान की बाजी लगाई ।

3. सैन्य का संगठन : पृथ्वीराज ने अपनी सेना का संगठन किया और युद्ध में अपना श्रेष्ठ नेतृत्व दिखाया । उन्होंने सैन्य रणनीतियों को अपनाया और मेवाड़ के क्षेत्र की सुरक्षा के लिए उसे मजबूत किया ।

(ii) **'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के आधार पर महाराणा प्रताप का चरित्र-चित्रण कीजिए ।**

Solution : 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य में महाराणा प्रताप का चरित्र अत्यंत प्रेरणादायक और वीरता से भरा हुआ है । इस काव्य में महाराणा प्रताप को एक महान योद्धा, कर्तव्यनिष्ठ शासक और अपनी मातृभूमि के प्रति पूरी तरह से समर्पित व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है । उनकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

1. वीरता और साहस : महाराणा प्रताप की वीरता और साहस सर्वविदित हैं । उन्होंने मुग़ल साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष किया और अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए कठिन से कठिन संघर्षों का सामना किया । उनका प्रसिद्ध युद्ध हल्दीघाटी युद्ध उनकी वीरता का प्रतीक है ।

2. स्वतंत्रता और राष्ट्रप्रेम : महाराणा प्रताप ने अपने देश और राज्य की स्वतंत्रता के लिए हमेशा संघर्ष किया । उन्होंने मुग़ल साम्राज्य से न केवल युद्ध लड़ा, बल्कि उन्होंने हर संभव तरीके से मेवाड़ की स्वतंत्रता को बनाए रखा ।

3. निष्ठा और कर्तव्यनिष्ठा : महाराणा प्रताप का जीवन अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठा से भरा हुआ था । उन्होंने कभी भी अपने कर्तव्यों को छोड़ने का विचार नहीं किया । अपने राज्य और जनता के प्रति उनकी निष्ठा अपूर्व थी ।

4. संगठक और रणनीतिक नेता : प्रताप ने युद्ध की रणनीतियाँ तैयार की और अपने सैन्य को एकजुट कर उन्हें नेतृत्व प्रदान किया । उनका नेतृत्व और योजना युद्ध में बहुत प्रभावशाली थी, और उन्होंने कई बार मुश्किलों के बावजूद विजय प्राप्त की ।

5. संघर्ष के प्रतीक : महाराणा प्रताप संघर्ष और परिश्रम के प्रतीक थे । उनका जीवन यह दर्शाता है कि निष्ठा और समर्पण से किसी भी कठिनाई को पार किया जा सकता है ।

महाराणा प्रताप का जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है । उनका संघर्ष, वीरता और कर्तव्यनिष्ठा हमें

यह सिखाती है कि देश के प्रति निष्ठा और साहस से किसी भी मुश्किल का सामना किया जा सकता है ।

(ङ) (i) 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग का कथासार लिखिए ।

Solution : 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दिशा और उनके द्वारा किए गए संघर्षों का वर्णन है । इस सर्ग में गाँधीजी के महान कार्यों की शुरुआत, उनके सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों को लागू करने की योजना, और उनका सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक जीवन प्रस्तुत किया गया है ।
1. गांधीजी का संघर्ष और सत्याग्रह : द्वितीय सर्ग में गांधीजी का सत्याग्रह आंदोलन के प्रति समर्पण और उनके विचारों को प्रमुखता दी गई है । यहाँ गांधीजी के नेतृत्व में भारत में असहमति, शोषण, और सामाजिक बुराईयों के खिलाफ सशक्त आंदोलन की शुरुआत को दर्शाया गया है ।

2. धर्म और अहिंसा का पालन : इस सर्ग में गांधीजी के द्वारा अहिंसा को अपनाने की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है । गांधीजी का विश्वास था कि अहिंसा केवल युद्ध के मैदान में ही नहीं, बल्कि समाज में हर स्थान पर लागू करनी चाहिए ।

3. संघर्ष की शुरुआत : द्वितीय सर्ग में गाँधीजी के संघर्ष की शुरुआत, जिसमें उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ सत्याग्रह किया और भारतीय जनता को जागरूक करने का कार्य किया । यह सर्ग उनके नीतियों और संघर्ष के पहले कदम को उजागर करता है ।

(ii) **'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य के आधार पर महात्मा गाँधी का चरित्र-चित्रण कीजिए ।**

Solution : 'मुक्ति-दूत' खण्डकाव्य में महात्मा गाँधी का चरित्र अत्यंत प्रेरणादायक और आदर्श है । इस काव्य में गाँधीजी को एक महान नेता, समाज सुधारक, और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है । उनकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

1. सत्य और अहिंसा का पालन : गाँधीजी का जीवन सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों से प्रेरित था । उनका मानना था कि सत्य ही ईश्वर है और अहिंसा का पालन करने से हम समाज में शांति और सद्भावना ला सकते हैं । यही कारण था कि उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ अहिंसक सत्याग्रह आंदोलन की शुरुआत की ।

2. समाज सुधारक : गाँधीजी का जीवन केवल स्वतंत्रता संग्राम तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त असमानताओं और अन्याय के खिलाफ भी संघर्ष किया । उन्होंने छुआछूत, जातिवाद, और महिलाओं के अधिकारों के लिए भी आवाज उठाई ।

3. नैतिक नेतृत्व : गाँधीजी ने हमेशा नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से नेतृत्व किया । वे केवल राजनीतिक नेता नहीं थे, बल्कि उन्होंने भारतीय जनमानस में जागरूकता और आत्मविश्वास का संचार किया । उनका नेतृत्व शांतिपूर्ण था, और वे अपने अनुयायियों को सत्य, अहिंसा और धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते थे ।

4. कर्तव्यनिष्ठा : गाँधीजी में कर्तव्य के प्रति अत्यधिक निष्ठा थी । उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के लिए अपनी जान की बाजी लगाई और हमेशा अपने कर्तव्यों को सर्वोपरि माना । उनका यह विश्वास था कि यदि किसी कार्य को सही तरीके से किया जाए तो वह अवश्य सफल होता है ।

5. त्याग और समर्पण : गाँधीजी का जीवन त्याग और समर्पण से भरा हुआ था । उन्होंने व्यक्तिगत सुखों

को त्याग कर देश की स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन समर्पित किया । उनके इस समर्पण ने उन्हें एक महान नेता और आदर्श व्यक्तित्व के रूप में स्थापित किया ।
महात्मा गाँधी का जीवन सत्य, अहिंसा, और कर्तव्य के पालन का आदर्श है । उनका योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और समाज सुधार में अमूल्य है ।

(च) (i) 'कर्ण' खण्डकाव्य की सबसे प्रभावशाली घटना का वर्णन कीजिए ।

Solution : 'कर्ण' खण्डकाव्य में कर्ण का चरित्र संघर्ष, बलिदान और निष्ठा से भरा हुआ है । इस काव्य में कई घटनाएँ हैं, जो कर्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती हैं, लेकिन सबसे प्रभावशाली घटना तब घटित होती है जब कर्ण को अपनी असली माँ कुन्ती का परिचय मिलता है ।

1. कर्ण और कुन्ती का मिलन : कर्ण के जीवन की सबसे प्रभावशाली घटना वह है जब उसकी असली माँ कुन्ती, जो कि उसे जन्म देने के बाद त्याग चुकी थीं, कर्ण के पास आती हैं और उसे अपनी माता होने का उद्घाटन करती हैं । इस दृश्य में कर्ण को अपनी वास्तविक पहचान और उसके जन्म के सत्य का ज्ञान होता है । यह घटना कर्ण के दिल को आघात पहुँचाती है, क्योंकि वह जीवन भर यह जानने के लिए संघर्ष करता रहा कि उसका असली रचनाकार कौन है । इस क्षण में कर्ण का संघर्ष गहरा होता है, क्योंकि वह अपने कर्तव्यों और अपने असली रक्त के रिश्तों के बीच में फंसा हुआ महसूस करता है । यह घटना उसकी निष्ठा, बलिदान और अपने कर्मों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को समझने में मदद करती है ।

(ii) **'कर्ण' खण्डकाव्य के आधार पर 'कुन्ती' की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।**

Solution : 'कर्ण' खण्डकाव्य में कुन्ती का चरित्र बहुत ही गहरा और रहस्यमय है । वह एक माँ, एक स्त्री और एक महान व्यक्तित्व के रूप में चित्रित की गई हैं । उनकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

1. त्याग और बलिदान : कुन्ती का जीवन त्याग और बलिदान से भरा हुआ था । उन्होंने अपने पुत्र कर्ण को जन्म देने के बाद समाज के डर से उसे त्याग दिया । यह निर्णय उन्हें बहुत कठिनाई में डालता है, लेकिन वह अपने समाज और कर्तव्यों के प्रति अपनी निष्ठा के कारण इसे सहन करती हैं ।

2. प्रेम और सहानुभूति : कुन्ती के भीतर माँ का प्रेम अत्यधिक गहरा था । जब वह कर्ण से मिलती हैं और उसे अपनी माता होने का परिचय देती हैं, तो उनका प्रेम और सहानुभूति साफ दिखाई देती है । वह कर्ण के संघर्षों को समझती हैं और उसके साथ अपने संबंधों को सुधारने का प्रयास करती हैं ।

3. साहस और दृढ़ता : कुन्ती एक साहसी महिला थीं । उन्होंने अपने जीवन में कठिन परिस्थितियों का सामना किया, खासकर जब उन्होंने कर्ण को जन्म दिया और उसे त्याग दिया । फिर भी वह अपने परिवार और अपने कर्तव्यों के प्रति अपने निर्णयों पर दृढ़ रहीं ।

4. धार्मिक और नैतिक : कुन्ती का जीवन धार्मिक और नैतिक मूल्यों से प्रेरित था । वह हमेशा धर्म के अनुसार ही कार्य करती थीं, चाहे उनकी व्यक्तिगत कठिनाइयाँ कितनी भी बढ़ी हों । उनके जीवन में धार्मिकता का हमेशा प्राथमिक स्थान था, जो उन्हें कर्तव्यों और अन्याय से लड़ने की शक्ति देता था । कुन्ती का जीवन संघर्ष, बलिदान और नैतिकता से भरा हुआ था । उनका चरित्र भारतीय महिलाओं की शक्ति और सशक्तता का प्रतीक है ।

(छ) (i) 'तुमुल' खण्डकाव्य के नायक 'लक्ष्मण' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

Solution : 'तुमुल' खण्डकाव्य में लक्ष्मण का चरित्र अत्यंत वीर, निष्ठावान और कर्तव्यपरायण है । वह राम के प्रिय भाई और भगवान शिव के भक्त के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं । उनके जीवन के कुछ प्रमुख पहलुओं की व्याख्या निम्नलिखित है :

1. निष्ठा और समर्पण : लक्ष्मण का जीवन अपने भाई राम के प्रति असीम निष्ठा और समर्पण से भरा हुआ था । वह हमेशा राम के आदेशों का पालन करते थे और राम के साथ हर कठिनाई में खड़े रहते थे । उनका कर्तव्य के प्रति समर्पण अद्वितीय था ।

2. वीरता और साहस : लक्ष्मण को महान योद्धा के रूप में प्रस्तुत किया गया है । उन्होंने राम के साथ मिलकर राक्षसों का संहार किया और सीता माता की रक्षा के लिए हर प्रकार का संघर्ष किया । उनका साहस और वीरता युद्ध भूमि में स्पष्ट दिखाई देती है, विशेषकर रावण के पुत्र मेघनाद से युद्ध में ।

3. धैर्य और संयम : लक्ष्मण का चरित्र धैर्य और संयम से परिपूर्ण था । उन्होंने कभी भी किसी स्थिति में जल्दबाजी से काम नहीं किया और हर कार्य को सोच-समझ कर किया ।

4. भक्ति और धार्मिकता : लक्ष्मण भगवान शिव के परम भक्त थे और उन्हें हमेशा धर्म और भक्ति के रास्ते पर चलने का दृढ़ विश्वास था । उनके धार्मिक जीवन और आस्थाओं ने उन्हें और भी महान बना दिया ।

(ii) **'लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध तथा लक्ष्मण की मूर्च्छा' सर्ग की कथावस्तु लिखिए ।**

Solution : 'लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध तथा लक्ष्मण की मूर्च्छा' सर्ग रामायण के एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटनाक्रम का वर्णन करता है, जिसमें लक्ष्मण और मेघनाद (रावण का पुत्र) के बीच भयंकर युद्ध होता है ।

1. लक्ष्मण और मेघनाद का युद्ध : इस सर्ग में लक्ष्मण और मेघनाद के बीच मुठभेड़ का वर्णन है । मेघनाद ने अपनी शक्तियों और युद्धकला से लक्ष्मण को चुनौती दी थी, और युद्ध बहुत ही कड़ा था । लक्ष्मण ने मेघनाद को हराने के लिए पूरी ताकत से युद्ध किया, लेकिन मेघनाद ने अपनी मायावी शक्ति से लक्ष्मण को मूर्च्छित कर दिया ।

2. लक्ष्मण की मूर्च्छा : युद्ध के दौरान मेघनाद ने लक्ष्मण पर ऐसा प्रहार किया कि वह मूर्च्छित हो गए । लक्ष्मण की मूर्च्छा से राम और बाकी के वानर सेना के लोग चिंतित हो जाते हैं, क्योंकि लक्ष्मण ही राम के सबसे बड़े सहयोगी थे ।

3. हनुमान का उपचार : लक्ष्मण की मूर्च्छा को हटाने के लिए हनुमान जी को संजीवनी बूटी लेने के लिए हिमालय की ओर भेजा जाता है । हनुमान जी संजीवनी बूटी लेकर आते हैं और लक्ष्मण को जीवनदान देते हैं ।

4. युद्ध में पुनः विजय : लक्ष्मण के जीवित होने के बाद युद्ध फिर से निर्णायक मोड़ पर पहुँचता है । लक्ष्मण और मेघनाद के बीच युद्ध फिर से चलता है, लेकिन अंततः लक्ष्मण मेघनाद को हराकर विजय प्राप्त करते हैं ।
'लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध तथा लक्ष्मण की मूर्च्छा' सर्ग न केवल लक्ष्मण की वीरता को दर्शाता है, बल्कि इस सर्ग में रामायण के युद्धकला और भावनात्मक संघर्ष का भी बखूबी वर्णन किया गया है ।

(ज) (i) 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के 'राम-भरत-मिलन' सर्ग का कथानक संक्षेप में लिखिए ।

Solution : 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के 'राम-भरत-मिलन' सर्ग में राम और भरत के मिलन की कहानी

का अत्यंत भावुक और प्रेरणादायक चित्रण किया गया है । इस सर्ग में भरत के वनवास के समय राम के साथ मिलन का दृश्य बहुत ही मार्मिक है ।

1. भरत का राम के प्रति प्रेम : सर्ग की शुरुआत भरत के राम के प्रति अपार प्रेम और उनके प्रति निष्ठा को दर्शाती है । भरत ने राम के वनवास में उनके स्थान पर राज्य करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन राम के आदेश का पालन करते हुए वह राज्य का भार स्वीकार नहीं करते ।

2. राम और भरत का मिलन : जब राम को पता चलता है कि भरत ने उन्हें वनवास से वापस बुलाने के लिए कोई कूटनीति नहीं अपनाई, तो वह भरत से मिलने जाते हैं । दोनों भाइयों का मिलन बहुत भावुक होता है । भरत का प्यार और कर्तव्य के प्रति समर्पण राम के लिए एक अद्वितीय दृश्य प्रस्तुत करते हैं ।

3. राज्य की जिम्मेदारी : राम और भरत का मिलन केवल व्यक्तिगत संबंधों की पुन:स्थापना नहीं था, बल्कि यह राज्य की जिम्मेदारी को समझने का भी एक दृश्य था । भरत राम से राज्य की जिम्मेदारी प्राप्त करते हैं और राम को अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए प्रेरित करते हैं ।

(ii) **'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के आधार पर 'कैकेयी' की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।**

Solution : 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य में कैकेयी का चरित्र एक विरोधाभासी और जटिल रूप में प्रस्तुत किया गया है । कैकेयी की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

1. किसी प्रकार की असुरक्षा और इच्छाएँ : कैकेयी की विशेषता उनकी असुरक्षा और इच्छाओं में निहित है । वह चाहती थीं कि उनका पुत्र भरत राजा बने, और इसके लिए उन्होंने राम को वनवास भेजने का षड्यंत्र रचा । उनकी यह इच्छाएँ उन्हें एक अत्यधिक नकारात्मक रूप में प्रस्तुत करती हैं ।

2. मातृत्व और पक्षपाती व्यवहार : कैकेयी एक माँ के रूप में बहुत ही भावुक और पक्षपाती थीं । उनका प्रेम भरत के प्रति गहरा था, लेकिन यह प्रेम उनके निर्णयों में पक्षपाती और अधूरे रूप में व्यक्त हुआ । राम के प्रति उनका व्यवहार विशेष रूप से कड़वा था ।

3. कूटनीतिक निर्णय और विश्वासघात : कैकेयी ने अपने कूटनीतिक निर्णय से राम को वनवास भेजने के लिए राजा दशरथ से वचन लिया । यह एक विश्वासघात था, क्योंकि वह अपने निर्णयों में अपनी भावनाओं के बजाय राजनीतिक स्वार्थ को अधिक महत्व देती थीं ।

4. पश्चाताप : अपने निर्णयों के परिणामस्वरूप, कैकेयी को पछतावा होता है । उन्होंने जो किया, वह राम के प्रति उनके प्रेम की कमी और उनके कर्तव्य से विमुख होने का कारण बना । अंत में वह अपने किए पर पछताती हैं और राम से माफी की प्रार्थना करती हैं ।
कैकेयी का चरित्र यह दर्शाता है कि किसी भी स्थिति में स्वार्थी निर्णयों से परिवार और समाज को नुकसान हो सकता है, और कर्तव्य और प्रेम के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है ।

(झ) (i) 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य का कथानक संक्षेप में लिखिए ।

Solution : 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य में भारतीय समाज और संस्कृति के उत्कृष्टता का प्रतीक एक महान नायक, जवाहर की गाथा को प्रस्तुत किया गया है । काव्य में जवाहर के जीवन का उद्देश्य समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और अन्याय के खिलाफ संघर्ष करना है ।

1. नायक की भूमिका : काव्य में जवाहर एक साहसी और नैतिक व्यक्ति के रूप में उभरते हैं, जो अपनी

शिक्षा, ज्ञान, और समझ का उपयोग समाज की भलाई के लिए करता है । वह अपने परिवार, समाज, और राष्ट्र के प्रति निष्ठा और प्रेम से प्रेरित रहते हैं ।

2. समाज सुधारक : काव्य में जवाहर को एक समाज सुधारक के रूप में दिखाया गया है, जो समाज के विभिन्न वर्गों में व्याप्त अंधविश्वास और कुरीतियों के खिलाफ लड़ते हैं । उनका लक्ष्य समाज में जागरूकता फैलाना और लोगों के बीच समानता और सौहार्द्र स्थापित करना है ।

3. दृढ़ संकल्प : 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य का कथानक मुख्य रूप से जवाहर के दृढ़ संकल्प पर केंद्रित है, जो अपने कर्तव्यों के प्रति पूरी तरह से समर्पित रहते हैं । उन्होंने कठिन परिस्थितियों के बावजूद कभी भी अपने लक्ष्य को नहीं छोड़ा ।

(ii) **'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए ।**

Solution : 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के नायक, जवाहर का चरित्र अत्यंत प्रेरणादायक और निष्ठावान है । उनका जीवन समाज की भलाई के लिए समर्पित था, और उनके अंदर सभी सकारात्मक गुण थे । उनका चरित्र निम्नलिखित विशेषताओं से भरा हुआ था :

1. नैतिकता और ईमानदारी : जवाहर का जीवन नैतिकता और ईमानदारी के सिद्धांतों पर आधारित था । वह हमेशा सत्य के मार्ग पर चलने के पक्षधर थे, और उन्होंने कभी भी अपने कर्तव्यों को नजरअंदाज नहीं किया ।

2. सामाजिक जागरूकता और सुधारक : जवाहर समाज के उत्थान के लिए हमेशा सक्रिय रहते थे । उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई और सुधार के लिए कई कदम उठाए । उनका मानना था कि समाज को जागरूक बनाना ही उनके जीवन का उद्देश्य है ।

3. साहस और संघर्ष : जवाहर का चरित्र साहस और संघर्ष से भरा हुआ था । उन्होंने समाज में बदलाव लाने के लिए तमाम कठिनाइयों का सामना किया, लेकिन उन्होंने कभी भी हार नहीं मानी । उनके संघर्ष ने उन्हें एक आदर्श नेता बना दिया ।

4. मानवीयता और संवेदनशीलता : जवाहर का जीवन मानवीय मूल्यों और संवेदनशीलता से प्रेरित था । उन्होंने हमेशा गरीबों और जरूरतमंदों की मदद की और उनका जीवन दूसरों के प्रति दया और करुणा से भरा था ।

5. दृढ़ नायक : जवाहर एक दृढ़ नायक थे, जिन्होंने कभी भी अपनी नीतियों और सिद्धांतों से समझौता नहीं किया । वह अपने लक्ष्य के प्रति पूरी तरह से समर्पित थे और उन्हें प्राप्त करने के लिए उन्होंने हर संभव प्रयास किया ।
'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य का नायक जवाहर समाज के हर क्षेत्र में सुधार और विकास के लिए प्रेरणा का स्रोत है । उनका चरित्र हमें समाज की भलाई के लिए अपने कर्तव्यों को निभाने और नकारात्मकताओं से लड़ने की प्रेरणा देता है ।

26. (क) दिए गए लेखकों में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय देते हुए उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए :

(i) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

Solution : जीवन-परिचय : पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी हिंदी साहित्य के महान लेखक और कवि थे। उनका जन्म 31 जनवरी 1880 को मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में हुआ था। बख्शी जी ने साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किया, लेकिन वे विशेष रूप से अपने काव्य और निबंध लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने हिंदी साहित्य में नए दृष्टिकोण और शैली को अपनाया और उसे ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उनकी रचनाओं में समाज के विभिन्न पहलुओं पर गहरी दृष्टि मिलती है।
पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी एक प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार, कवि, और पत्रकार थे। उनका जन्म १८५७ में हुआ था। वे हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों में से एक माने जाते हैं और विशेष रूप से उनके योगदान ने हिंदी कविता को एक नई दिशा दी। वे प्रगति और सुधारक विचारधारा के व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव को प्रोत्साहित किया।

बख्शी जी ने अपनी लेखनी से हिंदी साहित्य में एक नई लहर पैदा की। उनकी कविताएँ आमतौर पर सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दों पर आधारित थीं। वे हिंदी कविता को ज्यादा जीवंत और सशक्त बनाने के पक्षधर थे।

इसके अलावा, वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समर्थक थे और उन्होंने भारतीय समाज के सुधार के लिए भी कई कार्य किए। उनकी लेखनी में भारतीय संस्कृति और समाज के प्रति एक गहरी समझ और संवेदनशीलता थी।

प्रमुख रचना : उनकी प्रमुख रचनाओं में "मुक्ति की ओर" और "समाज और साहित्य" शामिल हैं। "मुक्ति की ओर" उनके जीवन की दार्शनिकता और समाज सुधार के प्रति दृष्टिकोण को उजागर करता है।

पदुमलाल बख्शी ने हिंदी साहित्य में समाज सुधार और दार्शनिक विचारों को बहुत प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया, जो आज भी प्रासंगिक हैं।

(ii) जयशङ्कर प्रसाद

Solution : जीवन-परिचय : जयशङ्कर प्रसाद हिंदी साहित्य के महान कवि, नाटककार और उपन्यासकार थे। उनका जन्म 30 जनवरी 1889 को हुआ था। प्रसाद जी को हिंदी साहित्य में नई चेतना और सौंदर्यबोध देने वाले लेखकों में प्रमुख माना जाता है। उनका साहित्य भारतीय संस्कृति और समाज के गहरे प्रभावों को दर्शाता है। उन्होंने न केवल काव्य में, बल्कि नाटक और कहानी लेखन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।
जयशंकर प्रसाद हिन्दी साहित्य के महान कवि, नाटककार और लेखक थे। वे १९वीं और २०वीं सदी के भारतीय साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षरों में से एक माने जाते हैं। उनका जन्म ३० जनवरी १८८९ को वाराणसी, Solution प्रदेश में हुआ था। वे "छायावाद" के प्रमुख कवियों में से एक थे, और उनका योगदान भारतीय साहित्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

प्रसाद जी का साहित्य जीवन की गहरी अनुभूतियों, भावनाओं और भारतीय संस्कृति के गहरे अध्ययन पर आधारित था। उनकी कविताएँ, नाटक और कहानियाँ आत्मा की गहराई से निकलकर मानवता, प्रेम, सत्य, और धर्म की खोज करती हैं।

काव्य रचनाएँ :

कंकाल (1919) : यह उनकी प्रमुख काव्य रचनाओं में से एक है, जिसमें उनके दर्शन और गहरी संवेदनाएँ मिलती हैं। चित्रायन (1921) : यह भी उनकी एक महत्वपूर्ण काव्य रचना है जो उनकी विचारधारा और

कविता के उत्कर्ष को दर्शाती है । नाटक :

हँसी के बादल
स्कंदगुप्त
चन्द्रगुप्त
कहानियाँ :

कामायनी (1936) : यह उनका सबसे प्रसिद्ध महाकाव्य है और हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण काव्य ग्रंथ माना जाता है । यह रचनात्मकता, दर्शन और भारतीय संस्कृति का सम्मिलन है ।

प्रमुख रचना : उनकी प्रमुख रचनाओं में "कामायनी", "तितली", और "चन्द्रगुप्त" शामिल हैं । "कामायनी" उनकी सबसे प्रसिद्ध काव्य रचना है, जो मानवता और भारतीय संस्कृति की गहरी समझ को प्रस्तुत करती है ।

जयशङ्कर प्रसाद की रचनाओं में मनुष्य के जीवन के विभिन्न पहलुओं और मानवता के गहरे भावनाओं का अद्भुत चित्रण मिलता है ।

(iii) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

Solution : जीवन-परिचय : आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार, आलोचक और निबंधकार थे । उनका जन्म 5 जुलाई 1884 को हुआ था । शुक्ल जी ने हिंदी साहित्य की आलोचना और समीक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया और भारतीय साहित्य में अपनी स्थायी छाप छोड़ी । उनका योगदान हिंदी साहित्य के सुधार और विकास में अनमोल रहा है ।
आचार्य शुक्ल हिंदी साहित्य के अध्ययन और आलोचना के क्षेत्र में एक प्रमुख नाम थे । उन्होंने हिंदी साहित्य के विभिन्न रूपों की गहरी समझ और विश्लेषण प्रस्तुत किया । वे साहित्यिक आलोचना में प्रगति के समर्थक थे और उनके लेखन ने हिंदी साहित्य के मानकों को एक नई दिशा दी ।

प्रमुख रचनाएँ : हिंदी साहित्य का इतिहास (1915) :
यह उनकी सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण रचना मानी जाती है । इस पुस्तक में उन्होंने हिंदी साहित्य के विभिन्न युगों का गहन अध्ययन और विश्लेषण किया है । यह पुस्तक हिंदी साहित्य के इतिहास को समझने और उसकी विशेषताओं को जानने के लिए एक प्रमुख स्रोत मानी जाती है ।

आलोचना और विचार :
आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने साहित्य के आलोचनात्मक दृष्टिकोण को मजबूती दी और लेखन की सैद्धांतिकता को समझाया । उन्होंने साहित्य को समाज का दर्पण और जीवन के सत्य को उजागर करने वाला माध्यम माना ।

कविता, कथा और नाटक पर उनके आलेख :
शुक्ल जी ने कविता, कथा साहित्य और नाटक की विश्लेषणात्मक आलोचना की और इन साहित्यिक रूपों की महत्वता को रेखांकित किया ।

उनके विचार :
आचार्य शुक्ल ने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज सुधार और मानसिक विकास का एक प्रभावी माध्यम माना । उन्होंने साहित्य के मूल्य को समाज और संस्कृति के संदर्भ में समझाया । उनका मानना था कि साहित्य केवल बाहरी दिखावे को नहीं, बल्कि मानवता के गहरे स्वरूप

को उजागर करता है ।

उनका लेखन शैली :
आचार्य रामचंद्र शुक्ल की लेखन शैली शुद्ध, स्पष्ट और विचारोत्तेजक थी । उनके लेखों में गहरी बौद्धिकता और साहित्य के प्रति उनकी निष्ठा की स्पष्ट छाप मिलती है । वे साहित्य को गहरे रूप से समझने के लिए उसके समग्र प्रभाव और उसकी रचनाओं की संवेदनाओं को महत्वपूर्ण मानते थे ।

प्रमुख रचना : उनकी प्रमुख रचना "हिंदी साहित्य का इतिहास" है, जो हिंदी साहित्य के विकास और उसके विभिन्न कालों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है । यह रचना आज भी हिंदी साहित्य के इतिहास के अध्ययन में अत्यधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है ।
आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कार्य हिंदी साहित्य की आलोचना और इतिहास के क्षेत्र में आज भी अहम माना जाता है ।

(iv) रामधारी सिंह 'दिनकर'

Solution : जीवन-परिचय : रामधारी सिंह 'दिनकर' हिंदी के एक महान कवि, नाटककार और साहित्यकार थे । उनका जन्म 23 सितम्बर 1908 को बिहार के मुंगेर जिले के एक छोटे से गाँव में हुआ था । वे अपनी वीरता, राष्ट्रवाद, और काव्य की गहराई के लिए प्रसिद्ध थे । 'दिनकर' जी का लेखन भारतीय संस्कृति, राष्ट्रवाद, और समाज के सशक्त स्वरूप को प्रदर्शित करता है । उनका काव्य जीवन के संघर्ष और नायकत्व की अभिव्यक्ति था ।
दिनकर जी की कविताएँ वीरता, संघर्ष, देशप्रेम, और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ थीं । उनकी रचनाओं में एक विशिष्ट ऊर्जावानता, आदर्शवाद और भावनाओं की गहरी अभिव्यक्ति होती थी । उनका लेखन मुख्य रूप से तीन प्रमुख क्षेत्रों में देखा जाता है :

राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता संग्राम :
दिनकर की कविताएँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय में प्रेरणा का स्रोत बनती थीं । उनका लेखन भारतीय समाज की गहरी नब्ज को समझता था और उसे जागृत करने का कार्य करता था । वे देशभक्ति और वीरता के प्रतीक कवि थे ।

सामाजिक सुधार और आदर्शवाद :
उनके लेखन में समाज की कुरीतियों और अन्याय के खिलाफ एक संघर्ष दिखता है । उन्होंने समाज के विभिन्न पहलुओं पर गहरी सोच व्यक्त की, जैसे जातिवाद, भ्रष्टाचार, और अन्य सामाजिक कुप्रथाएँ ।

भावनात्मक गहराई :
दिनकर की कविताओं में एक गहरी भावनात्मक अनुभूति थी, और वे व्यक्तित्व के संघर्षों को भी उजागर करते थे । वे मानवीय संवेदनाओं और जीवन के विरोधाभासों को अपने काव्य में बहुत प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करते थे ।

प्रमुख रचना : उनकी प्रमुख रचनाओं में "रश्मिरथी", "उर्वशी", और "संस्कृति के चार अध्याय" शामिल हैं । "रश्मिरथी" उनकी सबसे प्रसिद्ध काव्य रचना है, जिसमें उन्होंने महाभारत के पात्र कर्ण के जीवन की गाथा को चित्रित किया है । यह रचना आज भी भारतीय साहित्य की सबसे शक्तिशाली रचनाओं में मानी जाती है ।
रामधारी सिंह 'दिनकर' का काव्य भारत की वीरता और स्वतंत्रता संघर्ष को प्रकट करता है, और यह प्रेरणा का एक अमूल्य स्रोत है ।

(ख) निम्नलिखित कवियों में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए :
(i) तुलसीदास

Solution : जीवन-परिचय : तुलसीदास हिंदी के महान कवि, संत और धार्मिक विचारक थे । उनका जन्म 1532 में Solution प्रदेश के एक छोटे से गाँव राजापुर में हुआ था । तुलसीदास जी को रामभक्ति के प्रति अपनी अडिग श्रद्धा और अपने काव्य से रामकाव्य को प्रचलित करने के लिए जाना जाता है । उनका जीवन भगवान श्रीराम के प्रति अपार प्रेम और भक्ति से प्रेरित था । वे न केवल एक कवि थे, बल्कि धार्मिक क्रांति के अग्रदूत भी थे । उन्होंने राम के जीवन और कार्यों को विस्तार से प्रस्तुत किया, जिससे रामायण की लोकप्रियता और प्रभाव में वृद्धि हुई ।
तुलसीदास हिंदी साहित्य के महान कवि, संत और धार्मिक विचारक थे । उनका जन्म १५३२ के आस-पास हुआ था, हालांकि जन्म स्थान को लेकर कुछ मतभेद हैं, पर अधिकांश स्रोतों के अनुसार उनका जन्म Solution प्रदेश के अयोध्या जिले के रघुकुल ब्राह्मण परिवार में हुआ था । वे विशेष रूप से भगवान श्रीराम के भक्त रहे और उनकी रचनाएँ हिंदू धर्म और संस्कृति में अत्यधिक महत्वपूर्ण मानी जाती हैं ।

तुलसीदास की रचनाएँ न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से, बल्कि साहित्यिक दृष्टि से भी अत्यधिक मूल्यवान हैं । उनका साहित्य भारतीय संस्कृति, भक्ति और मानवता की भावना से प्रेरित है । वे हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि माने जाते हैं, और उनकी कविताएँ आज भी लोगों के दिलों में बसी हुई हैं ।

प्रमुख रचना : उनकी प्रमुख रचनाओं में 'रामचरितमानस' है, जो भारतीय साहित्य की सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण काव्य रचनाओं में से एक मानी जाती है । इस रचना में राम के जीवन, उनके संघर्ष, और उनके आदर्शों का अत्यंत सुंदर वर्णन किया गया है ।
'रामचरितमानस' न केवल एक धार्मिक ग्रंथ है, बल्कि यह जीवन के आदर्शों और नैतिकता को भी उजागर करता है, जो आज भी भारतीय समाज में प्रासंगिक हैं ।

(ii) मैथिलीशरण गुप्त

Solution : जीवन-परिचय : मैथिलीशरण गुप्त हिंदी के प्रसिद्ध कवि और साहित्यकार थे । उनका जन्म 3 अगस्त 1886 को Solution प्रदेश के झाँसी जिले में हुआ था । वे आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं और हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना और समाज सुधार के विचारों को प्रस्तुत करने के लिए प्रसिद्ध हैं । उनका लेखन स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीयता से प्रेरित था, और उन्होंने अपने काव्य में भारतीय संस्कृति और राष्ट्रवाद को प्रमुखता से चित्रित किया ।
मैथिलीशरण गुप्त हिंदी साहित्य के एक महान कवि और लेखक थे, जिन्हें भारतीय साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है । उनका जन्म ३ अगस्त १८८६ को Solution प्रदेश के झाँसी जिले के चिरगांव गाँव में हुआ था । वे "हिंदी साहित्य के रचनाकार" के रूप में जाने जाते हैं और विशेष रूप से राष्ट्रीय जागरूकता और भारतीय संस्कृति के प्रति उनके समर्पण के लिए प्रसिद्ध हैं । मैथिलीशरण गुप्त ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया और भारतीय समाज के परिप्रेक्षय में नए दृष्टिकोण प्रस्तुत किए ।

मैथिलीशरण गुप्त का साहित्यिक योगदान :
मैथिलीशरण गुप्त को मुख्य रूप से राष्ट्रीय कविता और काव्यकाव्य में नए दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है । उनका लेखन मुख्य रूप से भारतीय संस्कृति, इतिहास, राष्ट्रीयता और समाज की समस्याओं पर केंद्रित था । उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज में जागरूकता और सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में कार्य किया ।
प्रमुख रचना : उनकी प्रमुख रचनाओं में 'भारत-भारती' और 'काव्य-रत्नाकर' शामिल हैं । 'भारत-भारती'

उनकी सबसे प्रसिद्ध काव्य रचना है, जिसमें उन्होंने भारतीय राष्ट्रीयता, स्वतंत्रता संग्राम और भारतीय संस्कृति की महिमा का गहरा चित्रण किया है ।
'भारत-भारती' में मैथिलीशरण गुप्त ने भारतीय समाज और संस्कृति के गौरव को व्यक्त किया, जिससे भारतीय राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता संग्राम के प्रति जागरूकता बढ़ी ।

(iii) सुमित्रानन्दन पन्त

Solution : जीवन-परिचय : सुमित्रानन्दन पन्त हिंदी के एक प्रमुख कवि और साहित्यकार थे । उनका जन्म 20 मई 1900 को Solution ाखंड के कौसानी गांव में हुआ था । पन्त जी हिंदी साहित्य के छायावादी आंदोलन के प्रमुख कवि थे । उनका लेखन प्रकृति, जीवन के गहरे अनुभवों और आंतरिक भावनाओं का चित्रण करता है । उन्होंने भारतीय समाज और संस्कृति के विविध पहलुओं को अपने काव्य में समाहित किया ।
सुमित्रानंदन पंत हिंदी साहित्य के महान कवि और साहित्यकार थे, जिन्हें हिंदी साहित्य में विशेष रूप से छायावाद (Symbolism) के प्रमुख कवि के रूप में जाना जाता है । उनका जन्म २० मई १९०० को Solution ाखंड राज्य के अल्मोड़ा जिले के गाँव कौसानी में हुआ था । वे अपनी कविताओं में प्रकृति, मानवता, और प्रेम के गहरे भावों को व्यक्त करने के लिए प्रसिद्ध थे ।

पंत जी का साहित्यिक योगदान विशेष रूप से काव्यात्मक गहराई और भावनात्मक संवेदनशीलता के लिए जाना जाता है । उनकी कविताएँ जीवन के रहस्यों, सुंदरता, और अस्तित्व के महत्वपूर्ण प्रश्नों के बारे में विचार करती थीं । वे प्रकृति के अत्यधिक प्रेमी थे, और उनकी कविताओं में प्राकृतिक सौंदर्य का अनुपम चित्रण मिलता है ।
प्रमुख रचना : उनकी प्रमुख रचनाओं में 'पल्लव' और 'चिदम्बर' शामिल हैं । 'पल्लव' उनका प्रसिद्ध काव्य संग्रह है, जिसमें उन्होंने छायावाद के सिद्धांतों का पालन करते हुए प्राकृतिक सौंदर्य और मानव भावना को दर्शाया है ।
सुमित्रानन्दन पन्त का काव्य जीवन के गहरे भावनात्मक अनुभवों और प्रकृति के सौंदर्य को प्रकट करने का अद्वितीय तरीका था ।

(iv) अशोक बाजपेयी

Solution : जीवन-परिचय : अशोक बाजपेयी हिंदी के एक समकालीन कवि, निबंधकार और साहित्यिक विचारक हैं । उनका जन्म 1947 में हुआ था । वे हिंदी कविता के आधुनिक संवेदनशील कवियों में गिने जाते हैं । उनका लेखन विश्लेषणात्मक और रचनात्मक दृष्टिकोण से परिपूर्ण है । उन्होंने अपने काव्य में समाज के विभिन्न पहलुओं को बारीकी से प्रस्तुत किया है और उनके लेखन में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विचारों की गहरी छाप है ।
अशोक बाजपेयी एक प्रमुख हिंदी कवि, आलोचक और साहित्यकार हैं, जिन्हें विशेष रूप से उनकी कविताओं और साहित्यिक आलोचनाओं के लिए जाना जाता है । वे समकालीन हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों में से एक माने जाते हैं । उनका लेखन सामान्यत : समाज, संस्कृति, और अस्तित्व के गहरे विषयों पर आधारित होता है, और वे अपनी कविताओं के माध्यम से विचार और संवेदनाओं को व्यक्त करते हैं ।

अशोक बाजपेयी का साहित्यिक योगदान :
अशोक बाजपेयी का लेखन आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रमुख धारा से जुड़ा हुआ है । उनकी कविताओं में समाज के संकट, वास्तविकता की कठिनाइयाँ, और मानव जीवन के असमंजस को सहजता और गहराई से व्यक्त किया गया है । उनके विचार सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों पर गहरे प्रभाव डालते

हैं, और उनकी कविताएँ आज भी पाठकों के बीच प्रासंगिक हैं ।

प्रमुख रचना : उनकी प्रमुख रचनाओं में 'नया आकाश' और 'धूप का न होना' शामिल हैं । 'नया आकाश' उनके काव्य संग्रह की महत्वपूर्ण रचना है, जिसमें उन्होंने समाज के समकालीन मुद्दों और संघर्षों का चित्रण किया है ।
अशोक बाजपेयी का काव्य भारतीय समाज और उसकी परंपराओं के संघर्ष का गहरा और संवेदनशील चित्रण करता है, जो पाठकों को सोचने के लिए प्रेरित करता है ।

27. अपनी पाठ्य-पुस्तक में से कण्ठस्थ कोई एक श्लोक लिखिए जो इस प्रश्न-पत्र में न आया हो ।

Solution : श्लोक : धृतराष्ट्र उवाच ।
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सव : ।
मामका: पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय ॥

अनुवाद : धृतराष्ट्र ने कहा : हे संजय, धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में एकत्रित होकर युद्ध की इच्छा रखने वाले मेरे और पाण्डवों के लोग क्या कर रहे हैं ?
यह श्लोक महाभारत के पहले अध्याय का प्रारंभिक श्लोक है, जिसमें धृतराष्ट्र अपने मंत्री संजय से युद्ध की स्थिति और घटनाओं के बारे में पूछते हैं ।

28. अपने मुहल्ले की नालियों की समुचित सफाई के लिए नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए ।

Solution : प्रेषक :
श्रीराम शर्मा
मुख्य मार्ग, गली नंबर 5,
विवेक नगर, दिल्ली ।

प्रति :
स्वास्थ्य अधिकारी,
नगर निगम कार्यालय,
दिल्ली ।

दिनांक : 18 फरवरी 2025 ।

विषय : नालियों की सफाई हेतु अनुरोध ।

मान्यवर,

सादर प्रणाम ।

मैं, श्रीराम शर्मा, विवेक नगर का निवासी, आपके ध्यान में लाना चाहता हूँ कि हमारे मुहल्ले की नालियाँ काफी समय से साफ नहीं की जा रही हैं । इसके कारण न केवल गंदगी का जमाव हो रहा है, बल्कि विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ फैलने का खतरा भी बढ़ गया है । गंदगी के कारण यहां के निवासियों को काफी असुविधा का सामना करना पड़ रहा है, और विशेषकर बारिश के मौसम में स्थिति और भी गंभीर हो जाती है ।

आपसे निवेदन है कि हमारी नालियों की सफाई जल्द से जल्द करवाई जाए, ताकि स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से बचा जा सके और मुहल्ले में स्वच्छता बनी रहे । कृपया इस विषय में शीघ्र कार्रवाई करें ।

आपकी सहायता के लिए हम आभारी रहेंगे ।

धन्यवाद ।

सादर,
श्रीराम शर्मा

स्वच्छता अभियान में स्थानीय प्रशासन की सक्रिय भागीदारी और नागरिकों का सहयोग दोनों आवश्यक हैं, ताकि स्वच्छता को बनाए रखा जा सके और स्वास्थ्य समस्याओं से बचा जा सके ।

29. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के Solution संस्कृत में लिखिए :
(i) **आरुणि : कः आसीत् ?**

Solution : आरुणि : महर्षि आसीत् । तस्य शिक्षा विद्या क्षेत्रे प्रमुखं योगदानं आसीत् ।

(ii) **वीर : केन पूज्यते ?**

Solution : वीर : य : धर्मेण युक्त : साहसिकं कृत्यं कर्तुम् अर्हति, तेन पूज्यते ।

(iii) **चन्द्रशेखरः स्वनाम किम् अवदत् ?**

Solution : चन्द्रशेखरः स्वनाम "स्वतंत्रता का दीवाना" इति अवदत् ।

(iv) **मैत्री केन वर्धते ?**

Solution : मैत्री स्वधर्मेण, सत्यं च प्रेमणा वर्धते ।
संतुलित और सशक्त संबंधों के लिए प्रेम, सम्मान, और विश्वास महत्वपूर्ण हैं, जो संस्कृत साहित्य में महत्वपूर्ण रूप से चित्रित होते हैं ।

30. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

(i) **आतंकवाद : कारण एवं निवारण**

Solution : निबंध :
आतंकवाद : कारण एवं निवारण
आतंकवाद आज की दुनिया का एक अत्यंत गंभीर और जटिल मुद्दा बन चुका है । यह एक ऐसी समस्या है, जिसका प्रभाव न केवल देशों की सुरक्षा पर पड़ता है, बल्कि यह समाज के सामाजिक ताने-बाने को भी प्रभावित करता है । आतंकवाद से निपटने के लिए हमें इसके कारणों और निवारण की दिशा में गंभीर विचार करना आवश्यक है ।

आतंकवाद के कारण : आतंकवाद के मुख्य कारणों में राजनीतिक, धार्मिक, और सामाजिक असंतोष पर-

मुख हैं । जब एक व्यक्ति या समूह को लगता है कि उनके पास कोई और रास्ता नहीं है, तो वे आतंकवादी गतिविधियों का सहारा लेते हैं । धार्मिक उग्रवाद और विभिन्न समुदायों के बीच का मतभेद भी आतंकवाद को बढ़ावा देता है । इसके अतिरिक्त, बेरोजगारी, गरीबी, और शिक्षा की कमी भी युवाओं को आतंकवादी संगठनों में शामिल होने के लिए प्रेरित करती है ।

आतंकवाद का निवारण : आतंकवाद का निवारण केवल सुरक्षा उपायों से नहीं किया जा सकता । इसके लिए हमें समाज में शांति, समझ, और समृद्धि का प्रचार करना होगा । राजनीतिक संवाद और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है । इसके अलावा, युवाओं को सही दिशा में मार्गदर्शन देने के लिए शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है ।

आतंकवाद से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग और समन्वय भी आवश्यक है । केवल एक देश अकेले इस समस्या का समाधान नहीं कर सकता, इसलिए सभी देशों को एकजुट होकर आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़नी होगी ।

निष्कर्ष : आतंकवाद एक वैश्विक समस्या है, जिसका समाधान केवल कड़े सुरक्षा उपायों से नहीं किया जा सकता । इसके लिए हमें समाज, राजनीति, और शिक्षा के स्तर पर सुधार करना होगा । केवल तभी हम आतंकवाद को जड़ से समाप्त कर सकते हैं और एक शांतिपूर्ण और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं ।

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई केवल सैन्य कार्रवाई से नहीं जीती जा सकती, बल्कि शिक्षा, संवाद और सामाजिक समझ से इसे जड़ से खत्म किया जा सकता है ।

(ii) **देश-प्रेम**

Solution : निबंध :
देश-प्रेम
देश-प्रेम हर नागरिक का पहला कर्तव्य है । यह केवल शब्दों में नहीं, बल्कि क्रियाओं में भी दिखना चाहिए । देशप्रेम केवल राष्ट्रीय ध्वज या गीत तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसका वास्तविक रूप हमारे कार्यों और विचारों में होना चाहिए ।

देश-प्रेम की भावना : देश-प्रेम का अर्थ केवल अपने देश के प्रति निष्ठा और प्रेम नहीं है, बल्कि यह अपने देश की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए काम करना भी है । जब हम अपने देश की समस्याओं को समझते हैं और उन्हें हल करने की कोशिश करते हैं, तो यह असली देशप्रेम है ।

देश-प्रेम का अभ्यास : देश-प्रेम का अभ्यास छोटे-छोटे कार्यों से शुरू होता है । जैसे कि स्वच्छता अभियान में भाग लेना, दूसरों के साथ सहयोग करना, और अपने देश की संस्कृति और परंपराओं का सम्मान करना । यही वह कार्य हैं जो राष्ट्र के निर्माण में मदद करते हैं ।

निष्कर्ष : देश-प्रेम केवल शब्दों का खेल नहीं है, यह एक जीवनशैली है । यह हमसे अपने देश के प्रति निष्ठा, जिम्मेदारी और त्याग की अपेक्षाएँ करता है । यदि हम सभी अपनी जिम्मेदारियों को समझें और ईमानदारी से काम करें, तो हम अपने देश को समृद्ध बना सकते हैं ।
देशप्रेम केवल राष्ट्रीय ध्वज या गीत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे दैनिक कार्यों और समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी का परिणाम है ।

(iii) **विज्ञान : वरदान या अभिशाप**

Solution : निबंध :
विज्ञान : वरदान या अभिशाप
विज्ञान ने मानवता को जो वरदान दिया है, वह अकल्पनीय है । आजकल के युग में विज्ञान के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती । लेकिन क्या यह केवल वरदान ही है ? क्या इसके कुछ दुष्प्रभाव भी नहीं हैं ? यह दोनों पहलुओं पर विचार करने का समय है ।

विज्ञान का वरदान : विज्ञान ने जीवन को सरल और आरामदायक बना दिया है । चिकित्सा के क्षेत्र में विकास, परिवहन, संचार, और उर्जा उत्पादन में विज्ञान ने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है । इंटरनेट, मोबाइल फोन, और आधुनिक चिकित्सा उपकरणों ने हमारे जीवन को अत्यधिक सुविधाजनक बना दिया है ।

विज्ञान का अभिशाप : हालाँकि, विज्ञान के दुरुपयोग से कई समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं । परमाणु हथियारों का विकास, प्रदूषण, और जैविक हथियारों का प्रयोग विज्ञान के दुरुपयोग के उदाहरण हैं । पर्यावरण में बदलाव और वैश्विक warming जैसी समस्याएँ भी विज्ञान के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई हैं ।

निष्कर्ष : विज्ञान एक शक्तिशाली उपकरण है जो हमारे जीवन को बेहतर बना सकता है, लेकिन इसे संयम और जिम्मेदारी के साथ उपयोग करना जरूरी है । यदि हम इसका सही दिशा में उपयोग करें, तो यह एक वरदान साबित होगा, अन्यथा यह अभिशाप बन सकता है ।

विज्ञान के दुरुपयोग से बचने के लिए हमें इसे नियंत्रित और नैतिक तरीके से उपयोग करना चाहिए, ताकि इसके लाभ समाज के लिए अधिकतम हो सकें ।

(iv) **विद्यार्थी-जीवन में खेल का महत्त्व**

Solution : निबंध :
विद्यार्थी-जीवन में खेल का महत्त्व
विद्यार्थी जीवन में खेलों का महत्त्व अत्यधिक है । यह केवल शारीरिक विकास ही नहीं, बल्कि मानसिक विकास में भी सहायक होते हैं । खेल विद्यार्थियों को जीवन के महत्वपूर्ण सिद्धांतों को सिखाते हैं जैसे संघर्ष, टीमवर्क, समय प्रबंधन, और अनुशासन ।

शारीरिक लाभ : खेल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं । यह शरीर को फिट रखता है, रोगों से बचाव करता है, और समग्र ऊर्जा स्तर को बढ़ाता है । नियमित रूप से खेल खेलना विद्यार्थियों को मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों में सशक्त बनाता है ।

मानसिक लाभ : खेल मानसिक विकास में भी सहायक होते हैं । यह विद्यार्थियों को आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता, और नेतृत्व कौशल में वृद्धि करने का अवसर प्रदान करते हैं । खेलों में प्रतिस्पर्धा और जीत-हार का अनुभव भी छात्रों को जीवन के वास्तविक संघर्षों का सामना करने के लिए तैयार करता है ।

निष्कर्ष : विद्यार्थी जीवन में खेल का महत्त्व किसी भी अध्ययन से कम नहीं है । यह शारीरिक और मानसिक विकास के साथ-साथ विद्यार्थियों को स्वस्थ और संतुलित जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है ।
खेल न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए, बल्कि मानसिक सुदृढ़ता और जीवन के लिए आवश्यक गुणों के विकास के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं ।